जनसंकुलन के प्रति अनुक्रियाएँ (Responses to Crowding)

मनोवैज्ञानिकों ने अनेक अध्ययनों के आधार पर बतलाया है कि जनसंकुलन से व्यक्ति के भावात्मक अवस्था में परिवर्तन आ जाता है। जनसंकुलन व्यक्ति में चिंता, डर, क्रोध तथा अन्य दुखद अनुभूतियाँ उत्पन्न कर देती है। जनसंकुलन के प्रति होने वाले प्रतिक्रियाओं को निम्नांकित श्रेणियों के अन्तर्गत बाँट कर अध्ययन किया जा सकता है—

→ जनसंकुलन का मनोवैज्ञानिक तथा दैहिक प्रभाव — कई मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में यह देखा गया है कि जनसंकुलन के मनोवैज्ञानिक तथा दैहिक दोनों तरह के प्रभाव उत्पन्न होते हैं। Evans (1979) ने अपने अध्ययन में यह पाया है कि जनसंकुलन से हृदय गति तथा रक्त चाप में वृद्धि जैसी बिमारी उत्पन्न हो जाती है। पॉलस, मैककेन एवं काक्स (1978) ने गत 16 साल की अवधि में मनश्चिकित्सीय कैद में होने वाले मृत्युदर का अध्ययन किया। परिणाम में पाया गया कि जैसे जैसे जनसंख्या घनत्व में वृद्धि होती गयी, मृत्यु दर में भी वृद्धि हुई।

→ जनसंकुलन का अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण पर प्रभाव — मनोवैज्ञानि

Scanned with CamScanner

अध्ययनों एवं शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि सामाजिक घनत्व का संबंध अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण से नकारात्मक होता है। अर्थात् सामाजिक घनत्व में वृद्धि से अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण में कमी होती है। बेरोन तथा उनके सहयोगियों द्वारा एक अध्ययन के दौरान एक ऐसे कमरे में तीन छात्रों को रहने के लिए बाध्य किया गया जिसमें दो ही छात्र के रहने की समुचित व्यवस्था थी। इनसे प्राप्त अनुक्रियाओं की तुलना वैसे दो छात्रों की अनुक्रिया से की गयी जो ऐसे कमरे में रहते थे जिनमें दो ही छात्र के रहने का प्रावधान था। परिणाम में पाया गया कि संकुल कमरे में रहने वाले छात्रों का एक-दूसरे के प्रति न केवल आकर्षण में कमी थी बल्कि वे एक-दूसरे के कार्यों में सहयोग भी कम ही करते थे।

→ प्रतिसामाजिक व्यवहार तथा आक्रामकता पर जनसंकुलन का प्रभाव — जनसंकुलन का प्रभाव प्रतिसामाजिक व्यवहार खासकर दूसरों की मदद करने वाले व्यवहार तथा आक्रामकता पर अधिक पड़ता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से प्राप्त परिणामों से पता चलता है कि जनसंकुलित परिस्थिति के होने से दूसरों को मदद करने के व्यवहार में कमी आती है। इसका एक संभावित व्याख्या यह है कि संकुल परिस्थिति में उत्तरदायित्व की भावना का विसरण हो जाता है।

जनसंकुलन का प्रभाव आक्रामक व्यवहार पर भी पड़ता है। जनसंकुलित परिस्थिति में लोगों में आक्रामकता में वृद्धि होती है। स्टोकोल्स तथा उनके सहयोगियों ने अपने अध्ययन में यह पाये कि जब पुरुषों को एक छोटे कमरे में रखा जाता था तो उनमें आक्रामकता काफी बढ़ जाती थी हालाँकि महिलाओं में ऐसा नहीं होते पाया जाता था। परंतु कुछ मनोवैज्ञानिकों जैसे Loo (1978) ने इसके विपरीत भी परिणाम पाये हैं।

→ कार्य निष्पादन पर जनसंकुलन का प्रभाव — जनसंकुलन का कार्य निष्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव का एक सामान्य

WK 16 • 111-254

21

APRIL
SUNDAY

APPOINTMENTS

स्पष्ट है कि मनसंतुलन से साधारण कार्य का तो निष्पादन प्रभावित नहीं होता है. परंतु जटिल कार्य का निष्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। क्योंकि मनसंतुलन से व्यक्ति में उलझन उत्पन्न होता है, अतः
8 इसका प्रभाव निश्चित रूप से कार्य के स्वरूप के अनुसार असर पड़ता है।
9 स्पष्टतः कहा जा सकता है कि मनसंतुलन का प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार पर काफी व्यापक रूप से
10 पड़ता है. तथा व्यक्ति को इससे नुकसान ही अधिक होता है।
11